Ñfr % fo'knfot;Jhfoèkku

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR;jRukdj]{kekewfrZ
vkpk;Z Jh 108 fo'knlkxjthegkjkt

laLdj.k % izFke&2014* izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kkylkxjthegkjkt

lg;ksxh % {kqYyd Jh 105 folkselkxjthegkjkt

laiknu % cz- T;ksfrnhnh¼9829076085½vkLFkknhnh] liuknhnh

la;kstu % lksuwnhnh] fdj.knhnh] vkjrhnhnh] mekrhnh

lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIrLFky % 1- tSu ljksoj lfefr] fuEkZydqekj xksèkk]
2142] fuEkZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV
efugkjksa dk jkLrk] t;iqj
Qksu%0141&2319907¼?kj½eks- %9414812008

2- Jh jkts'kdqekj tSu Bsdsnkj
,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks- %9414016566

3- fo'kn lkfgR; dsUnz
Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh
jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879

4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu
t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh
fu;j ykycÙkh pkSd] xka/khuxj] fnYyh
eks- 09818115971] 09136248971

eY; % 25@&#-ek=k

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री सुरेन्द्र जैन नरेन्द्र जैन

C/o वर्धमान साड़ी शोरूम

बजाजा बाजार, नारनौल (हरियाणा) फोन : 09416364941

eqnzd%ikjl izdk'ku] fnYyh Qksu ua-%09811374961] 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com

^^fot;Jh fo/kkudj djsgj{ks=esafot;dhizkfIr**

हुण्डावसर्पिणी रूप इस कलिकाल में जब शरीर अन्न का कीड़ा बना हुआ है यह आश्चर्य की बात है कि जिन मुद्रा को धारण करने वाले ऋषिगण आज भी इस पृथ्वी तल पर विहार करते हैं। आजकल भौतिकता के वातावरण में त्याग धर्म का निभाना अति कठिन है। सम्पूर्ण परिग्रह के त्यागी महामुनि उँगलियों पर गिने-चुने हैं। फिर भी जैसे एक सूर्य सारे संसार के अन्धकार का नाश करके उसे प्रकाशित कर देता है वैसे ही ये थोड़े से साधुगण भी अपने आचरण और उपदेश के द्वारा संसार में फैले हुए अज्ञान अन्धकार का नाश कर सम्यग्ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। क्योंकि इनके जीवन का लक्ष्य ही मात्र स्व और पर का कल्याण करना होता है।

वर्तमान के श्रेष्ठ एवं ज्येष्ठ आचार्य परमेष्ठी पद पर आसीन प. **पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज** ने अपने अन्तस के भावों को एक माला में पिरोकर 111 विधानों की रचना की है। सभी पूजन विधान एक से बढ़कर एक हैं।

इन्हीं 111 विधानों कीशृंखला में एक यह **विजय श्री विधान** है। शब्दों की लय, ताल, भाषा इतनी सरल व मधुर है कि पूजन विधान करते समय अन्तस मन अनायास ही भाव विभोर होकर प्रभु भक्ति में समर्पित हो जाता है। हमने स्वयं 1008 बार आचार्य श्री द्वारा प्रदत्त विधानों को भारत के विभिन्न जैन मंदिरों में मंत्रोच्चार पूर्वक सम्पन्न करवाया है। समाज में इन विधानों के प्रति विशेष उत्साह देखा गया कई अतिशय चमत्कार भी जीवन में घटित हुए।

यह विधान आप माण्डले की सुन्दर रचना कर प्रतिष्ठाचार्य संगीतकार समाज के सहयोग से भारी उत्साह के साथ सम्पन्न करें यदि अकेले करना है तो अष्टद्रव्य से माण्डले की रचना किए बिना आप थाली में भी यह विधान सम्पन्न कर सकते हैं। यह विधान आपके जीवन में कर्म निर्जरा का कारण बने इसी भावना के साथ...

पुनश्च गुरुदेव के श्री चरणों में त्रिभक्ति पूर्वक नमोस्तु-3

-मुनि विशाल सागर (संघस्थ)

श्री विजयराज यंत्र नं. १

७१	६४	६९	८	१	६	५३	४६	५१
६६	६८	७०	३	५	७	४८	५०	५२
६७	७२	६५	४	९	२	४९	५४	४७
२६	१९	२४	४४	३७	४२	६२	५५	६०
२१	२३	२५	३९	४१	४३	५७	५९	६१
२२	२७	२०	४०	४५	३८	५८	६३	५६
३५	२८	३३	८०	७३	७८	१७	१०	१५
३०	३२	३४	७५	७७	७९	१२	१४	१६
३१	३६	२९	७६	८१	७४	१३	१८	११

विधि :- इस यंत्र को रवि पुष्य में भोजपत्र सोना या चाँदी के पत्रे पर खुदवा कर पूजन करने से कोर्ट, कचहरी, शत्रुजय आदि सर्वकार्य में जय-विजय लाभ होता है।

श्री विजयराज यंत्र नं. २

४७	५८	६९	८०	१	१२	२३	३४	४५
५७	६८	७९	९	११	२२	३३	४४	४६
६७	७८	८	१०	२१	३२	४३	२४	५६
७७	७	१८	२०	३१	४२	५३	५५	६६
६	१७	१९	३०	४१	५२	६३	६५	७६
१६	२७	२९	४०	५१	६२	६४	७५	५
२६	२८	३९	५०	६१	७२	७४	४	१५
३६	३८	४९	६०	७१	७३	३	१४	२५
३७	४८	५९	७०	८१	२	१३	२४	३५

विधि :- इस विजय दायक यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध या लौंगों के रस से लिखकर ताबीज में डालकर बांधने से राजा प्रजा सभी बन्धु अपने अनुसार चलते हैं विजय प्राप्त होती है।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा–**पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।

अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- **नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।**
शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।**
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

विजय श्री विधान

स्तवन

दोहा– विजय श्री दायक रहा, पावन परम विधान।
चौबिस जिन के चरण में, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छंद)

प्रथम देव अर्हन्त पूजते, सर्व जगत मंगलकारी।
सिद्ध दशा को पाने वाले, परम सिद्ध हैं शिवकारी॥
अर्हत् कल्पतरू कहलाए, इच्छित फल के दाता हैं।
भवि जीवों को अभय प्रदायक, अनुपम भाग्य विधाता हैं॥1॥
अर्हत् हुए अनन्त भूत में, आगे होते जाएँगे।
अर्हत् केवलज्ञानी आगे, सिद्ध परम पद पाएँगे॥
तीर्थंकर सामान्य केवली, उपसर्ग मूक केवली गाये।
समुद्घात केवलज्ञानी अरु, अन्तःकृत भी कहलाए॥2॥
कर्मोदय से यदि किसी के, रोग भयंकर भारी हो।
तन-मन रहता हो अशांत या, अन्य कोई बीमारी हो॥
विघ्न कोई आ जाते हों या, कोई असाता आ जावे।
भक्ती पूजा करने वाला, निश्चित ही साता पावे॥3॥
विजय श्री नामक इस विधान का, श्रवण पठन शुभकारी है।
भव-भव के जो लगे कर्म वह, कर्म प्रणासनकारी है॥
सारे जग का वैभव पाकर, इन्द्रादी पदवी पाते।
अचरज क्या जिन की पूजा से, अर्हत् ही नर बन जाते॥4॥
इस विधान की महिमा कोई, शब्दों में ना कह पावे।
अल्पमती नर की क्या शक्ती, बृहस्पति भी रह जावे॥
पूजा करने से भक्तों के, कर्म शमन हो जाते हैं।
भव्य जीव जिन की अर्चा कर, मोक्ष महाफल पाते हैं॥15॥
दोहा– 'विशद' भाव से भव्य जो, यह विधान इक बार।
करें कराएँ जिन चरण, पावें शांति अपार॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

विजय श्री विधान

श्री चौबीस तीर्थंकर समुच्चय पूजा

स्थापना

ऋषभादिक चौबीस जिनेश्वर, पाए पावन केवल ज्ञान।
दिव्य देशना देकर कीन्हे, भवि जीवों का जो कल्याण॥
जिनका दर्शन करके पाएँ, दर्शन ज्ञानाचरण निधान।
विशद भाव से करते हैं हम, हृदय कमल में शुभ आह्वान॥
दोहा–अनन्त चतुष्टय के धनी, तीर्थंकर भगवान।
करते हैं हम भाव से, श्री जिन का गुणगान॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनाः! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

हम जन्म जरादिक रोगों के, दुःखों से बहु अकुलाए हैं।
अब उत्तम धर्म प्राप्त करने, यह नीर चढ़ाने लाए हैं॥
नवकोटी से वृषभादी जिन के, पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांति हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम संसार ताप में जलकर, काल अनादि सताए हैं।
अब भ्रमण नाश हो मम भवका, यह गंध चढ़ाने लाए हैं॥
नवकोटी से वृषभादी जिन के, पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भटक रहे हैं इस भव में, ना पद अक्षय शुभ पाए हैं।
अब उत्तम अक्षय पद पाएँ, अक्षत चरणों में लाए हैं।
नवकोटी से वृषभादी जिन के, पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विषय भोग के भवरों में, अज्ञानी हो उलझाए हैं।
अब काम रोग के नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
नवकोटी से वृषभादी जिन के, पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त कामबाणविध्वंश्नाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मन की इच्छाओं को प्रभुवर, हम पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
हम क्षुधा रोग को शांत करें, यह व्यंजन षट्रस लाए हैं।।
नव कोटी से वृषभादी जिन के, पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दीपक की शुभ ज्वाला से, अंतर का तिमिर न मिट पाए।
अब मोह अंध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर हम लाए।।
नव कोटी से वृषभादीजिन के, पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप सुगंधित द्रव्यमयी, इस सारे जग को महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, यह धूप जलाने हम आए।।
नव कोटी से वृषभादी जिन के, पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु लौकिक फल की इच्छा कर, वह लौकिक फल सारे पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, तव चरण श्रीफल ले आए।।
नव कोटी से वृषभादी जिन के, पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, अरु दीप धूप फल ले आए।
वसु द्रव्य मिलाकर इसीलिए, यह अर्घ्य चरण में हम लाए।।
नव कोटी से वृषभादि जिन के, पद में हम वन्दन करते।
नवग्रह की शांती हेतु प्रभु, माथा तव चरणों में धरते।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्त अनर्घपद प्राप्तय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–जलधारा देते शुभम्, पूजाकर हे नाथ!
नवग्रह मेरे शंत हों, चरण झुकाएँ माथ।।
।।शांतये शांतिधारा।।

दोहा–जगत पूज्य तुम हो प्रभो! जगती पति जगदीश।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।।
।।दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रथम वलय

दोहा–नवग्रह शांती के रहे, चौबिस जिन आधार।
भाव सहित जो पूजते, पावें सौख्य अपार।।
(इति प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

नवग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ्य

(चौपाई)

ग्रहारिष्ट रवि शांती पाएँ, पद्म प्रभु पद शीश झुकाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट चन्द्रप्रभ स्वामी, शांति किए होके शिवगामी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं भौम ग्रह भी रह पाए, वासुपूज्य को पूज रचाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलादी वसु जिन को ध्यायें, ग्रहारिष्ट बुध पूर्ण नशाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुन्थु, अरह, नमि, वर्धमान अष्ट जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभादी वसु जिन शिवकारी, ग्रहारिष्ट गुरु नाशनहारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं सुरगुरुग्रहारिष्ट निवारक श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, सुपारस, शीतल, श्रेयांस अष्ट जिनवरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्रारिष्ट निवारक गाए, पुष्पदन्त स्वामी मन भाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्राग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत की महिमा गाए, शनि अरिष्ट ग्रह ना रह पाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवाकर श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट केतू नश जाये, मल्लि पार्श्व का ध्यान लगाये।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारकर श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस जिनवर को जो ध्याते, ग्रहारिष्ट से शांती पाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व ग्रहारिष्ट शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा– गगन मध्य में ग्रहों का, फैला भारी जाल।
ग्रह शांती के हेतु हम, गाते हैं जयमाल।।

(चौबोला छन्द)

जगत गुरू को नमस्कार मम्, सद्गुरु भाषित जैनागम्।
ग्रह शांती के हेतु कहूँ मैं, सर्व लोक सुख का साधन।।
नभ में अधर जिनालय में जिन, बिम्बों को शत् बार नमन्।
पुष्प विलेपन चरू धूप युत, करता हूँ विधि से पूजन।।1।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह होय निवारण, पद्म प्रभु के अर्चन से।
चन्द्र भौम ग्रह चन्द्र प्रभु अरु, वासुपूज्य के वन्दन से।।
बुध ग्रह अरिष्ट निवारक वसु जिन, विमलानन्त धर्म जिन देव।
शांति कुन्थु अर नमि सुसन्मति, के चरणों में नमन् सदैव।।2।।
गुरु ग्रह की शांती हेतु हम, वृषभाजित सुपार्श्व जिनराज।
अभिनन्दन शीतल श्रेयांस जिन, सम्भव सुमति पूजते आज।।
शुक्र अरिष्ट निवारक जिनवर, पुष्पदंत के गुण गाते।
शनिग्रह की शांती हेतू प्रभु, मुनिसुव्रत को हम ध्याते।।3।।
राहू ग्रह की शांति हेतु प्रभु, नेमिनाथ गुणगान करें।
केतू ग्रह की शांति हेतु प्रभु, मल्लि पार्श्व का ध्यान करें।।
वर्तमान चौबीसी के यह, तीर्थंकर हैं सुखकारी।
आधि व्याधि ग्रह शांती कारक, सर्व जगत मंगलकारी।।4।।
जन्म लग्न राशी के संग ग्रह, प्राणी को पीड़ित करते।

बुद्धिमान ग्रह नाशक जिनकी, अर्चा कर पीड़ा हरते॥
पंचम युग के श्रुत केवली, अन्तिम भद्रबाहु मुनिराज।
नवग्रह शांति विधि दाता पद, 'विशद' वन्दना करते आज॥5॥

दोहा– चौबीसों जिन राज की, भक्ति करें जो लोग।
नवग्रह शांती कर 'विशद', शिव का पावें योग॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा– चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगल परम।
मंगल करें सदैव, नवग्रह बाधा शांत हो॥

॥इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

द्वितीय वलय

दोहा– ज्ञानावरणादिक रहे, अष्ट कर्म दुखकार।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने भव से पार॥

॥इति द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

(त्रोटक छन्द)

जो ज्ञानावरण नशाए हैं, प्रभु केवल ज्ञान जगाए हैं।
प्रभु लोका-लोक प्रकाशी हैं, जो घाती कर्म विनाशी हैं॥
प्रभु गुणानन्त के स्वामी हैं, जग-जन के अन्तर्यामी हैं।
जिन पद में अर्घ्य चढ़ाते हैं, हम सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म विजेता श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो दर्शन आवरणी नाशे, वह लोकालोक को प्रतिभाषे।
प्रभु ज्ञाता द्रष्टा ज्ञानी हैं, जो वीतराग विज्ञानी हैं॥
प्रभु गुणानन्त के स्वामी हैं, जग-जन के अन्तर्यामी हैं।
जिन पद में अर्घ्य चढ़ाते हैं, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म विजेता श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं वेदनीय के क्षयकारी, गुण अव्याबाध के हैं धारी।
निज गुण का वेदन करते हैं, कल्मस सारे जो हरते हैं॥
प्रभु गुणानन्त के स्वामी हैं, जग-जन के अन्तर्यामी हैं।
जिन पद में अर्घ्य चढ़ाते हैं, हम सादर शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विजेता श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह कर्म विनसाए हैं, जो सुख अनन्त प्रगटाए हैं।
जिन गुणानन्त के धारी हैं, जो चित् स्वरूप अविकारी हैं॥
प्रभु गुणानन्त के स्वामी हैं, जग-जन के अन्तर्यामी हैं।
जिन पद में अर्घ्य चढ़ाते हैं, हम सादर शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विजेता श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आयू कर्म नशायक हैं, अवगाहन गुण प्रगटायक हैं।
जो शाश्वत शिव पद पाए हैं, शिवपुर में धाम बनाए हैं॥
प्रभु गुणानन्त के स्वामी हैं, जग-जन के अन्तर्यामी हैं।
जिन पद में अर्घ्य चढ़ाते हैं, हम सादर शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं आयुकर्म विजेता श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम कर्म विनसाए हैं, सूक्ष्मत्व सुगुण प्रगटाए हैं।
जिनकी अति महिमा न्यारी है, जो आतम ब्रह्म विहारी हैं॥
प्रभु गुणानन्त के स्वामी हैं, जग-जन के अन्तर्यामी हैं।
जिन पद में अर्घ्य चढ़ाते हैं, हम सादर शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं नामकर्म विजेता श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु गोत्र कर्म का नाश करें, फिर अगुरुलघु गुण आप धरें।
जो निज आतम के वासी हैं, जिन विशद धर्म विश्वासी हैं॥
प्रभु गुणानन्त के स्वामी हैं, जग-जन के अन्तर्यामी हैं।
जिन पद में अर्घ्य चढ़ाते हैं, हम सादर शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं गोत्रकर्म विजेता श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अन्तराय विनसाए हैं, वह वीर्यानन्त भी पाए हैं।
प्रभु बल अनन्त के धारी हैं, जो जन-जन के उपकारी हैं।।
प्रभु गुणानन्त के स्वामी हैं, जग-जन के अन्तर्यामी हैं।
जिन पद में अर्घ्य चढ़ाते हैं, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म विजेता श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

ज्ञानावरण आदि कर्मों का, जिनवर करते पूर्ण विनाश।
यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध शिला पर करते वास।।
अष्ट गुणों को पाने हेतू, करते हम प्रभु का गुणगान।
'विशद' भावना यही हमारी, प्राप्त करें हम पद निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म विजेता श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय

दोहा– हिंसा चार प्रकार की, चार बताए ध्यान।
चार दान संज्ञा रहीं, करते हैं गुणगान।।

।।इति तृतीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत।।

(शम्भू छन्द)

संकल्पी हिंसा कर हमने, कई जीवों को कष्ट दिया।
अज्ञानी होकर के मैंने, काल अनादी पाप किया।।
उन पापों से बचने को हम, जिन अर्चा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने को लाए।।1।।

ॐ ह्रीं संकल्पी हिंसा पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारम्भ खेती आदिक के, किए अनेकों हमने काम।
आरम्भी हिंसा के कारण, कर्म बन्ध भी किए तमाम।।
उन पापों से बचने को हम, जिन अर्चा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने को लाए।।2।।

ॐ ह्रीं आरंभी हिंसा पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कई उद्योगों या व्यापारों, में हिंसा की हो अन्जान।
मोहित होकर किया कर्म का, बन्धन हमने बहुत महान।।
उन पापों से बचने को हम, जिन अर्चा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने को लाए।।3।।

ॐ ह्रीं उद्योगी हिंसा पापजनित उपद्रवत निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे विरोधी जो भी सारे, उनका किया सदा उपकार।
जिस कारण हिंसा की हमने, कर्म बन्ध तब किया अपार।।
उन पापों से बचने को हम, जिन अर्चा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने को लाए।।
दोहा– संकल्पी आदिक रही, हिंसा चार प्रकार।
हिंसा त्यागी जीव सब, पाते शिव का द्वार।।4।।

ॐ ह्रीं विरोधी हिंसा पापजनति उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन संज्ञा के वश होकर, जीव महा दुख पाते हैं।
भूख मिटाने को सब प्राणी, पापों में लग जाते हैं।।
उन पापों से बचने को हम, जिन अर्चा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने को लाए।।5।।

ॐ ह्रीं आहार संज्ञा पापजनति उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय संज्ञा के कारण प्राणी, भय से होते हैं भयभीत।
आकुलता में कर्म बन्ध कर, जीवन करते हैं व्यतीत।।
उन पापों से बचने को हम, जिन अर्चा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने को लाए।।6।।

ॐ ह्रीं भय संज्ञा पापजनति उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैथुन संज्ञा से आकुल हो, पापों का करते हैं बन्ध।
जीवों की हिंसा करते वह, जीव बनाते हैं सम्बन्ध।।

उन पापों से बचने को हम, जिन अर्चा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने को लाए।।7।।

ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर वस्तू में आसक्ती बहु, रखते परिग्रह संज्ञा वान।
धन संचय भौतिक भोगों में, कर्म बन्ध जो करें प्रधान।।
उन पापों से बचने को हम, जिन अर्चा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने को लाए।।8।।

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छन्द)

इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगज, पीड़ा चिन्तन और निदान।
आर्त ध्यान ये चार बताए, जो हैं कर्म बन्ध की खान।।
उन पापों से बचने को हम, जिन अर्चा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने को लाए।।9।।

ॐ ह्रीं आर्त्तध्यान पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसा असत्य चोरी विषयों के, संरक्षण में हो आनन्द।
रौद्र ध्यान यह चार बताए, जिनसे हो कर्मों का बन्ध।।
उन पापों से बचने को हम, जिन अर्चा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने को लाए।।10।।

ॐ ह्रीं रौद्रध्यान पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज्ञापाय विपाक संस्थान, विचय कहे ये धर्मध्यान।
भवि जीवों के लिए कहे यह, मोक्ष मार्ग के शुभ सोपान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं चढ़ाकर करते हम प्रभु का गुणगान।
विशद भावना यही हमारी, पाएँ हम शिव का सोपान।।11।।

ॐ ह्रीं धर्मध्यानप्रदायकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथक वितर्कादिक बतलाया, शुक्लध्यान भी चार प्रकार।
अष्ट कर्म से मुक्ति दिलाकर, पहुँचाते हैं भव से पार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं चढ़ाकर करते हम प्रभु का गुणगान।
विशद भावना यही हमारी, पाएँ हम शिव का सोपान।।12।।

ॐ ह्रीं शुक्लध्यानप्रदायकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुपात्र को भक्तिभाव से, प्रासुक देता औषधि दान।
इस भव के सुख पाता है वह, अन्त प्राप्त करता निर्वाण।।
देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा, धारण करते हैं जो जीव।।
मोक्ष मार्ग में कारण है जो, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।13।।

ॐ ह्रीं औषधदान शक्ति प्रदायकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु के कर कमलों में करते, ज्ञान प्रदायक शास्त्र प्रदान।
कौण्डेश ग्वाला सम बनके वह, कुन्दकुन्द सम पाते ज्ञान।।
देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा, धारण करते हैं जो जीव।।
मोक्ष मार्ग में कारण है जो, प्राप्त करे वह पुण्य अतीव।।14।।

ॐ ह्रीं ज्ञानदानशक्तिप्रदायकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योग्य पात्र को देते हैं जो, भक्ति भाव से शुभ आहार।
आहार दान प्रदाता श्रावक, करते हैं स्व-पर उपकार।।
देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा, धारण करते हैं जो जीव।।
मोक्ष मार्ग में कारण है जो, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।15।।

ॐ ह्रीं आहारदानशक्तिप्रदायकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभय दान दाता देते हैं, मुनि के रहने को आवास।
पुण्य का फल श्रावक पाते हैं, परम्परा से मुक्ती वास।।
देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा, धारण करते हैं जो जीव।।
मोक्ष मार्ग में कारण है जो, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।16।।

ॐ ह्रीं अभयदानशक्तिप्रदायकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''पूर्णार्घ्य''

दोहा– हिंसा चार को तजने वाले, संज्ञाएँ भी तजते चार।
ध्यान चार अरु दान चार के, धारी पाते मुक्ती द्वार॥

ॐ ह्रीं हिंसा संज्ञा विनाशक ध्यान दान प्रकाशक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

दोहा– कृत कारित अनुमोदना, चार कषाएँ योग।
पाप त्याग नवलब्धियाँ, पावें शिव पद भोग॥

(इति चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(ज्ञानोदय छन्द)

संकट विकट व्याधियाँ कितनी, कर्मोदय से आये।
मन में हो दुर्भाव अनेकों, कई दुष्कर्म उपाए॥
उन पापों से बचने हेतू, श्री जिन पद को ध्याते।
मन मंदिर में तिष्ठाते हम, सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं मानसिक पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटुक कठोर वचन कह हमने, सबको दुख पहुँचाया।
बन्धन किया कर्म का भारी, दुःख उदय में पाया॥
उन पापों से बचने हेतू, श्री जिन पद को ध्याते।
मन मंदिर में तिष्ठाते हम, सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं वाचनिक पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन को पाकर किया उपद्रव, जिससे जीव सताए।
कर्मोदय आया जब मेरे, हम रोये चिल्लाए॥
उन पापों से बचने हेतू, श्री जिन पद को ध्याते।
मन मंदिर में तिष्ठाते हम, सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं कायिक पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं किए दुष्कर्म अनेकों, भारी कर्म बढ़ाए।
जिनके कारण जग में भटके, दुःख अनेकों पाए॥
उन पापों से बचने हेतू, श्री जिन पद को ध्याते।
मन मंदिर में तिष्ठाते हम, सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं स्वयंकृत पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच तन से पर के द्वारा, कितने पाप कराए।
उनसे पीड़ित हुए जीव कई, बन्ध कर्म का पाए॥
उन पापों से बचने हेतू, श्री जिन पद को ध्याते।
मन मंदिर में तिष्ठाते हम, सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं कारित पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानी हो पाप कर्म की, अनुमोदन की भाई।
भ्रमण किया चारों गतियों में, कष्ट सहे अधिकाई॥
उन पापों से बचने हेतू, श्री जिन पद को ध्याते।
मन मंदिर में तिष्ठाते हम, सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं अनुमोदना पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधाग्नी में जलकर हमने, जग को दुखी बनाया।
धर्म कर्म को भूलके हमने, हीरा जन्म गँवाया॥
उन पापों से बचने हेतू, श्री जिन पद को ध्याते।
मन मंदिर में तिष्ठाते हम, सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं क्रोधकषाय पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहंकार के वश हो मैंने, सबको तुच्छ बताया।
प्रेम भाव ना पाया पर से, पद-पद पर ठुकराया॥
उन पापों से बचने हेतू, श्री जिन पद को ध्याते।
मन मंदिर में तिष्ठाते हम, सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं मानकषाय पापजनित उपद्रव निवाकराय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ठगे गये माया ठगनी से, कितने चक्र चलाए।
दुख देकर जग के जीवों को, कितने पाप कमाए।।
उन पापों से बचने हेतू, श्री जिन पद को ध्याते।
मन मंदिर में तिष्ठाते हम, सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं मायाकषाय पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ पाप का बाप कहा है, जिसने हमे सताया।
मन मर्कट को जिसने घेरा, कैसा जाल बिछाया।।
उन पापों से बचने हेतू, श्री जिन पद को ध्याते।
मन मंदिर में तिष्ठाते हम, सादर शीश झुकाते।।10।।

ॐ ह्रीं लोभकषाय पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पाइता छन्द)

हिंसक जो प्राणी गाए, स्व पर घाती कहलाए।
वे पाप कमाते भारी, दुर्गति के हों अधिकारी।।
तज के पापों को भाई, जिन भक्ति करें सुखदायी।
दुख रोग शोक विनसाते, वे शिवपुर धाम बनाते।।11।।

ॐ ह्रीं हिंसा पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो बोलें मिथ्या वाणी, झूठे वे जग के प्राणी।
जीवों को सदा ठगाएँ, वे कर्म बन्ध ही पाएँ।।
तज के पापों को भाई, जिन भक्ति करें सुखदायी।
दुख रोग शोक विनसाते, वे शिवपुर धाम बनाते।।12।।

ॐ ह्रीं असत्य पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो औरों का धन हरते, अज्ञानी चोरी करते।
अपमानित हों दुख पाएँ, वे दुर्गति में ही जाएँ।।

तज के पापों को भाई, जिन भक्ति करें सुखदायी।
दुख रोग शोक विनसाते, वे शिवपुर धाम बनाते।।13।।

ॐ ह्रीं चौर्य पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ बहिन सुता पर नारी, इनसे जो करते यारी।
दुष्कर्मी वे कहलाते, बन्धन कर्मों का पाते।।
तज के पापों को भाई, जिन भक्ति करे सुखदायी।
दुख रोग शोक विनसाते, वे शिवपुर धाम बनाते।।14।।

ॐ ह्रीं कुशील पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन की जो आश बढ़ाते, वे परिग्रही कहलाते।
सर्पादिक बन दुख पाते, फिर नरकादिक में जाते।।
तज के पापों को भाई, जिन भक्ति करें सुखदायी।
दुख रोग शोक विनसाते, वे शिवपुर धाम बनाते।।15।।

ॐ ह्रीं परिग्रह पापजनित उपद्रव निवारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

सम्यक् श्रद्धा जागृत करके, पाना भाई भेद विज्ञान।
पर भावों से पृथक स्वयं को, शाश्वत सत्य त्रिकालिक ज्ञान।।
जो भी सिद्ध हुए हैं अब तक, इसी मार्ग को अपनाए।
ज्ञान ध्यान तप संयम पाकर, विशद ज्ञान को प्रगटाए।।
जिन उपदेश दिए यह शुभकर, जिसे प्राप्त करना अविराम।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र पद करें प्रणाम।।16।।

ॐ ह्रीं क्षायिकदानलब्धिधारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उपादेय है ज्ञान अतीन्द्रिय, गुणानन्तमय जीव स्वभाव।
पञ्च परावर्तन से विरहित, जिसमें होता बन्धाभाव।।
निर्विकल्प समरसी भावमय, जो विकार से रहा विहीन।
महाशांत अनुभव रस सागर, के आश्वादन में हो लीन।।

अमल अनूप अतुल अविकारी, अविनाशी है सहजानन्द।
सहज सर्वदर्शी सर्वोत्तम, चिन्मय ध्याते परमानन्द॥17॥

ॐ ह्रीं क्षायिकलाभलब्धिप्राप्त श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भव के भँवर जाल में फँस के, भाव मरण होता क्षण-क्षण।
राग द्वेश परणति को होना, कर्म बन्ध का है लक्षण॥
ज्ञान प्रकाश जगें अन्तर में, निज परिणति होवे आगे।
सम्यक् त्याग तपस्या द्वारा, पूर्ण तिमिर निज का भागे।
क्षायिक भोग लब्धि पाते हैं, केवल ज्ञानी जिन तीर्थेश।
कर्म नाशकर शिवपुर जाते, कर्म नाश करके अवशेष॥18॥

ॐ ह्रीं क्षायिकभोगलब्धिप्राप्त श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म मलों को क्षय करने में, भाव तीर्थ का है स्थान।
व्रत संयम सार्थक है उनका, जिनने पाया भेद विज्ञान॥
पर में आत्म बुद्धि के कारण, जीव दुखी रहता अन्जान।
कर्मोंकृत दुख सहता है जो, रागद्वेष कर स्वयं प्रधान॥
सम्यक् श्रद्धा के अभाव में, सर्व क्रियाएँ होतीं व्यर्थ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतू, प्राणी होता है असमर्थ॥19॥

ॐ ह्रीं क्षायिकउपभोगलब्धिधारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट कर्म आठों अंगों में, बन्धन डालें काल अनादि।
जग में रहे भ्रमण के कारण, राग मोह मद मिथ्यात्वादि॥
यद्यपि शुद्ध स्वभाव हमारा, उससे हम अनजान रहे।
अतः कर्म के चतुर्गती में, हमने कई घन घात सहे॥
मोहमयी परिणति को तज के, चरणों में सिरनाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, भाव से यहाँ चढ़ाते हैं॥20॥

ॐ ह्रीं क्षायिकवीर्यलब्धिधारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जड़ चेतन का भेद जानकर, करते जो निश्चल श्रद्धान।
तत्त्वों में श्रद्धा होने से, होता है निज पर का ज्ञान॥
निर्विकल्प निश्चल समाधि से, निज आतम का हो आनन्द।

अविनाशी परिपूर्ण अतीन्द्रिय, हो विनाश करते सब द्वन्द॥
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाकर, हुए आप हे जिन! स्वाधीन।
यही भावना भाते हैं हम, रहें आपके गुण में लीन॥21॥

ॐ ह्रीं क्षायिकदर्शनलब्धिधारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय निधि भव्य जीव को, सर्व ऋद्धियाँ करें प्रदान।
निर्विकल्प निश्चल समाधि धर, सर्व सिद्धियाँ पाएँ महान॥
रसिक रहे जो ज्ञान चेतना, के वह पाते केवल ज्ञान।
लोकालोक विशद हो जाता, क्षण में उनको ज्योर्तिमान॥
दर्शन लब्धी धारी जिनवर, ज्ञाता दृष्टा रहे महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं हम भी गुणगान॥22॥

ॐ ह्रीं क्षायिकदर्शनलब्धिधारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भाव शुभाशुभ और कषाएँ, कर्माश्रव करवाते हैं
रागद्वेष करने से कर्मों, के बन्धन बँध जाते हैं॥
संवर और निर्जरा करते, जो सम्यक् तप पाते हैं।
निज आतम को ध्याने वाले, केवलज्ञान जगाते हैं॥
क्षायिक ज्ञानलब्धि के द्वारा, अपने कर्म नशाएँगे।
पावन केवलज्ञान प्राप्त कर, के हम शिवपुर जाएँगे॥23॥

ॐ ह्रीं क्षायिकज्ञानलब्धिप्राप्त श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जब तक भेद ज्ञान यह प्राणी, नहीं स्वयं कर पाता है।
तब तक पर द्रव्यों को अपना, मान उन्हें अपनाता है॥
शुद्ध स्वभाव ज्ञानमय अपना, ज्ञान स्वयं में रम जाए।
आत्म ज्ञान चारित्र प्राप्त कर, 'विशद' ज्ञान नर प्रगटाए॥
निर्विकल्प समरसी भावमय, शुद्ध आत्मा ही है श्रेय।
निज से भिन्न पदार्थ सभी हैं, तीन लोक के भाई हेय॥24॥

ॐ ह्रीं क्षायिकचारित्रलब्धिधारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(पाहता छन्द)

योगादि पाप दुखकारी, तज बने लब्धि नवधारी।
वे केवल ज्ञान जगाते, अर्हत् पदवी को पाते॥

तीर्थंकर चौबिस भाई, पाए जग में प्रभु ताई।
हम जिन पद पूज रचाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।25।।

ॐ ह्रीं क्षायिक नव लब्धिधारकाय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ताटंक छन्द)

ऋद्धि-सिद्धि समृद्धी दाता, जिन तीर्थेश कहाए हैं।
कर्म घातिया नाशक श्री जिन के,वल ज्ञान जगाए है।।
कर्म विजय शुभ पाने को हम, जिन पद अर्घ्य चढ़ाते है।
विशद भाव से जिन चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।26।।

ॐ ह्रीं अष्ट चत्वारिंशद् दल कमलाधिपतये श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।शांतये शांतिधारा।।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः मम सर्व सौख्यं कुरु-कुरु स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

समुच्चय जयमाला

दोहा– भरतैरावत क्षेत्र में, जिन तीर्थेश त्रिकाल।
हुए होयेंगे जिन चरण, गाते हम जयमाल।।

(चौपाई)

जय जय तीर्थंकर हितकारी, तीर्थ प्रदाता मंगलकारी।
तीर्थ विधाता आप कहाए, चौबिस तीर्थंकर पद पाए।।
ढाई द्वीप में श्री जिन गाए, पन्द्रह कर्म भूमियाँ पाए।
सत्तर अधिक एक सौ जानो, कर्म भूमियाँ यह सब मानो।।
पाँच भरत ऐरावत गाए, काल विभाजन जिनका पाए।
जिनके चौथे काल में भाई, तीर्थंकर होते शिवदायी।।
पाँच विदेह श्रेष्ठ शुभकारी, कहे अवस्थित मंगलकारी।
जिनके उप विदेह शुभ जानो, बत्तिस बत्तिस संख्या मानो।।
विद्यमान तीर्थंकर स्वामी, नित्य निरन्तर हों शिवगामी।
दो या तीन कल्याणक जानो, पंच कल्याणक पाते मानो।।
पुर्व पुण्य का फल ये गाया, तीर्थंकर पदवी बतलाया।

पादमूल श्री जिन के पाते, पुण्य योग जो जीव जगाते।।
बन्ध तीर्थ पद का वह पाते, क्षायिक सम्यक् दर्शन पाते।
पञ्च कल्याणक देव मनाते, गर्भ शोध की क्रिया कराते।।
जन्मोत्सव पर हर्ष बढ़ाते, मेरु गिरी पे न्हवनन कराते।
तप कल्याण पे जय जय गाते, केवल ज्ञान कल्याण मनाते।
समवशरण आ इन्द्र रचाते, प्रभु निर्वाण कल्याणक पाते।
अग्नि कुमार देव तब आते, तन का वह संस्कार कराते।।
मुकुट से दिव्य अग्नि प्रगटाते, नख केशों को वहाँ जलाते।
इन्द्र कांकिणी रत्न बुलाते, चरण पादुका वहाँ बनाते।।
जिन पद सादर शीश झुकाते, चरण वन्दना कर हर्षाते।
श्री जिन पद की महिमा न्यारी, होती जग जन मंगलकारी।।
जिन पद में जो भक्ति बढ़ाएँ, वे अपने सौभाग्य जगाएँ।
पुण्य योग पाते हैं प्राणी, हो जाते मुक्ती पथ गामी।।
'विशद' भावना हम यह भाते, जिन पद सादर शीश झुकाते।
पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी, बनें मोक्ष के हम अधिकारी।।

दोहा– कर्म शत्रुओं पर विजय, पाएँ हम हे नाथ!।
'विशद' ज्ञान पाएँ प्रभो!, झुका रहे हम माथ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्ती करें विशाल जो, पाएँ विश्वानन्द।
तन मन होय विसोम शुभ, होय विशद आनन्द।

।।इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे हरियाणा प्रान्ते नारनौल ग्राम स्थित श्री 1008 शान्तिनाथ अतिशय क्षेत्रे मध्ये चैत्र मासे शुक्ल पक्षे एकादशं शुक्रवासरे विजय श्री विधान रचना समाप्त इति शुभं भूयात्।

चौबीस जिन की आरती

(तर्ज–माईं रि माईं...)

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन् प्रभुवर के चरणों में नमन्।

ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए। विशद आरती...

पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभू अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए। विशद आरती...

श्रेयनाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभू अविकारी, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए। विशद आरती...

शांति कुन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन-तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।।
मल्लिनाथ जी मोह मल्ल को, क्षण में मार भगाए। विशद आरती...

मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमी धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मती वीर अति, महावीर कहलाए। विशद आरती...

चौबिस जिन की आरति करने, आज यहाँ हम आए।
नाथ! आपकी भक्ती का शुभ, हम सौभाग्य जगाए।।
'विशद' मोक्ष पद पाने को हम, शरण चरण की पाएं। विशद आरती...

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय।।

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्त्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. चारित्र शुद्धि विधान
115. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
116. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
117. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
118. दिव्यध्वनि विधान
119. षट्खण्डागम विधान
120. श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान
121. विशद पञ्चागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ती संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन खिले मुरझा गए
127. जिंदगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ती के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. शुभषितरत्नावली
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग–3
139. नैतिक शिक्षा भाग–1, 2, 3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग–1
143. चिंतवन सरोवर भाग–2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग–1
148. मूक उपदेश भाग–2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ती पीयूष
153. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
154. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट : उपरोक्त 120 विधानों में से अधिकाधिक विधान कर अथाह पुण्यार्जन करें। –मुनि विशालसागर